

डॉ. एलेन फिलिप्स, ओल्ड टेस्टामेंट लिटरेचर, लेक्चर 13, द कल्टिक टोरा

© 2024 एलेन फिलिप्स और टेड हिल्लेब्रांट

खैर, चलिए आज बोकर टोव से शुरुआत करते हैं। वहां थोड़ी देरी से प्रतिक्रिया हुई। अच्छा है, आपको समझ आ गया।

आप यहाँ खुद ही घोषणाएँ देख सकते हैं, लेकिन मैं उनमें से कुछ पर ही टिप्पणी करूँगा। कृपया परीक्षा नीतियाँ देखें। वही लागू होती हैं।

वे सभी ब्लैकबोर्ड के घोषणा अनुभाग पर पोस्ट किए गए हैं, इसलिए उसी के साथ भी यही बात है। और इस बात के निहितार्थों की समीक्षा करना शुरू करें, जिस पर हमने पिछली बार कक्षा में चर्चा की थी, जब हम मुक्ति आंदोलन, हेर्मेनेयुटिक के संबंध में नागरिक टोरा के बारे में बात कर रहे थे। प्रश्न उसी से संबंधित होगा।

जाहिर है, यह सिर्फ इसे परिभाषित करने के बारे में नहीं है; आपको इसका इस्तेमाल करना होगा, ठीक है? उन तरीकों के बारे में सोचें जिनसे आप उस विशेष व्याख्यात्मक मॉडल का उपयोग कर सकते हैं, शायद कुछ मुद्दों से निपटने के लिए जो पहले नियम टोरा में हैं, जिनके बारे में हम आज सोचना चाहते हैं कि उन्हें कैसे लागू किया जाए, कुछ अधिक चुनौतीपूर्ण मुद्दे। तो यह निबंध प्रश्न है। यदि आपने अपने पाठ्यक्रम को देखा है, तो आप जानते हैं कि आज रात के लिए मूल रूप से एक खुला मंच निर्धारित किया गया था।

मैं दो कारणों से इसे रद्द कर रहा हूँ। उनमें से एक यह है कि मैंने आपमें से कई लोगों के साथ प्रश्नों के संदर्भ में पर्याप्त बातचीत कर ली है, और यह बहुत बढ़िया है। अगर आपने अभी तक ऐसा नहीं किया है तो अंदर आकर बात करें, और लंच अपॉइंटमेंट लें।

और कक्षा काफी छोटी है, मुझे लगता है कि हम वह कर सकते हैं जो मैं आमतौर पर खुले मंच पर करता हूँ। अगर किसी दूसरे खुले मंच के लिए कोई शोर-शराबा होता है, तो मैं निश्चित रूप से ऐसा करने के लिए तैयार हूँ, लेकिन ऐसा लग रहा है कि हम शायद अन्य तरीकों से सवालों का जवाब दे सकते हैं। और साथ ही, ईमानदारी से कहूँ तो, आज रात बर्फीली बारिश की बात हो रही है, इसलिए मैं वास्तव में ज़रूरत से ज़्यादा देर तक गाड़ी नहीं चलाना चाहूँगा।

ऐसा नहीं है कि मैं गाड़ी चलाने में कमज़ोर हूँ। मैं उत्तरी मिनेसोटा से हूँ। लेकिन, आप जानते हैं, बस, टेड, आप अपना सिर हिला रहे हैं।

मैं उन कारणों से सोचता हूँ, और वास्तव में, यह पहला कारण है जो दूसरे कारण से ज़्यादा इसे प्रेरित करता है। हम आज बलिदानों, और पुरोहिताई और पवित्रस्थान के बारे में बात करने जा रहे हैं। और मुझे लगता है कि भजन के संदर्भ में शुरुआत करने के लिए भजन 51 का हिस्सा एक बहुत अच्छी जगह है।

आप में से बहुत से लोग शायद इस भजन को जानते होंगे। दिलचस्प बात यह है कि मैंने इस साल इस क्लास में इसे पहले ही कह दिया होगा। पार्क स्ट्रीट चर्च में, जहाँ मैं जाता हूँ, हर बार जब हम प्रभु भोज या यूचरिस्ट मनाते हैं, तो हम सामूहिक रूप से भजन 51 पढ़ते हैं।

और इसलिए, मैं सुझाव दूंगा कि बलिदान के बारे में हमारे अध्ययन को शुरू करने के लिए यह एक उपयुक्त भजन है। इतना ही नहीं, बल्कि हम जल्द ही इसका एक हिस्सा गाना भी सीखने जा रहे हैं, शायद शुक्रवार से शुरू करेंगे। तो, इस तरह के सभी लोगों के अभी एक साथ आने का एक कारण है।

लेकिन मैं आपको भजन 51 के कुछ अंश पढ़कर सुनाता हूँ। हे परमेश्वर, अपनी करुणा के अनुसार मुझे पर दया कर। अपनी महान करुणा के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे।

मेरे सारे अधर्म को धो डालो। मुझे मेरे पाप से शुद्ध करो। क्योंकि मैं अपने अपराधों को जानता हूँ और मेरा पाप हमेशा मेरी नज़रों के सामने रहता है।

तेरे विरुद्ध ही मैंने पाप किया है और तेरी दृष्टि में जो बुरा है, वही किया है, ताकि तू बोलते समय सच्चा सिद्ध हो और न्याय करते समय न्यायसंगत ठहरे। निश्चय ही, मैं जन्म से ही पापी रहा हूँ। जब से मेरी माँ ने मुझे गर्भ में डाला, तब से मैं पापी हूँ, निश्चय ही तू अंतरतम भागों में सत्य की इच्छा रखता है। तू मुझे अंतरतम स्थान में ज्ञान सिखाता है। मुझे जूफा से शुद्ध कर, और मैं शुद्ध हो जाऊँगा। मुझे धो, और मैं बर्फ से भी अधिक श्वेत हो जाऊँगा। मुझे आनन्द और प्रसन्नता सुनने दे। जिन हड्डियों को तूने कुचला है, वे आनन्दित हों। मेरे पापों से अपना मुख छिपा ले। मेरे सारे अधर्म को मिटा दे।

और फिर श्लोक 10 से 12 वास्तव में ध्यान केन्द्रित करने वाले हैं, क्योंकि हम अंततः इसे गाने जा रहे हैं। हे परमेश्वर, मेरे अन्दर एक शुद्ध हृदय उत्पन्न कर, और मेरे अन्दर एक दृढ़ आत्मा का नवीनीकरण कर।

मुझे अपनी उपस्थिति से दूर न करें या अपनी पवित्र आत्मा को मुझसे दूर न करें। मुझे अपने उद्धार का आनंद लौटाएँ और मुझे सहारा देने के लिए एक इच्छुक आत्मा प्रदान करें। आइए हम यहीं रुकें और साथ मिलकर प्रार्थना करें क्योंकि हम अपनी कक्षा शुरू करते हैं, विशेष रूप से अभयारण्य, पुरोहिताई और बलिदान पर ध्यान केन्द्रित करते हुए।

आइए प्रार्थना करें।

दयालु स्वर्गीय पिता, हम इस कक्षा को एक साथ शुरू करते हैं। भजनकार के साथ-साथ हमारा दिल भी यही चाहता है कि आप हमें शुद्ध करें, हमारे भीतर शुद्ध हृदय उत्पन्न करें, और हमें हमारे उद्धार का आनंद लौटाएँ।

पिता, हम जानते हैं कि हम अपने आप में और अपने स्वयं के विशेष एजेंडों और अपनी चिंताओं में इतने उलझे रहते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि आपकी दया से, आप हमारे विचारों को पुनर्निर्देशित करें और हमें अंदर से बाहर तक वास्तव में साफ करें। हम उन लोगों के लिए बहाली

की प्रार्थना करते हैं जो इस समय बीमारी या अन्य प्रकार के दबावों से जूझ रहे हैं जो भारी महसूस होते हैं।

कृपया उन्हें अपनी आत्मा की पूरी मात्रा प्रदान करें ताकि वे इन मुद्दों का समाधान कर सकें। पिता, हम यह भी प्रार्थना करेंगे कि आप हमें हमारे आस-पास के लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए उपयोग करें। हम यह प्रार्थना करने का साहस करेंगे कि आप हमें इस अगले घंटे में अपने वचन के माध्यम से सिखाएँ।

मुझे स्पष्ट रूप से सिखाने में मदद करें। हमें वास्तव में यह एहसास हो कि आपकी आराधना करने का क्या मतलब है। और इसलिए हम ये सभी बातें माँगते हैं, मसीह के नाम पर शुक्रिया, आमीन।

खैर, मुझे लगता है कि हमें थोड़ा सा समीक्षा करनी होगी, लेकिन वास्तव में पहले बस एक छोटा सा आरेख, या आरेख भी नहीं, एक मॉडल की तस्वीर, वह कैसा है? यदि आप वास्तव में देखना चाहते हैं कि अभयारण्य का मॉडल कैसा दिखता है, तो आप इसे ऑनलाइन प्राप्त कर सकते हैं। यह यहाँ है। इसकी एक दृश्य छवि प्राप्त करना काफी मददगार है। हम इन भागों के काम करने के तरीके को समझने के लिए वापस आने वाले हैं।

वैसे, वहाँ तम्बू के कई मॉडल बनाए गए हैं। आप में से जो लोग दक्षिण-पूर्वी पेनसिल्वेनिया से हैं, उन्होंने लैकैस्टर काउंटी में एक को देखा होगा, वह पूरी आदमकद चीज़। अभयारण्य में क्या हुआ, यह समझने के मामले में यह बहुत, बहुत मददगार है।

इसलिए, हम आज इसे देखने के बाद ही इसकी मौखिक तस्वीर प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन आप कुछ चीजों पर ध्यान देंगे। प्रवेश द्वार से आते हुए, यहाँ वेदी, हौदी, वाश बेसिन है, और फिर निश्चित रूप से, यहाँ ठीक तम्बू में प्रवेश द्वार है, और हम इसके बारे में बाद में और अधिक बताने जा रहे हैं।

ध्यान दें कि वेदी हमें यह तथ्य दिखाती है कि ले जाने वाले डंडे वहाँ बहुत ज़्यादा हैं। अब, अगर आप इसे ध्यान से देखें, और अगर आपने पाठ को ध्यान से पढ़ा है, तो आप इस आरेख में कुछ समस्याएँ देख सकते हैं, लेकिन हम अभी वहाँ नहीं जा रहे हैं। यह हमें बस थोड़ा सा एहसास देता है।

कुछ परिचयात्मक मुद्दे। टोरा की श्रेणियाँ क्या हैं? फिर से, इस तथ्य को ध्यान में रखें कि श्रेणियाँ सिर्फ़ इस विषय पर सोचने में हमारी मदद करने के लिए ढाँचे हैं। वे क्या हैं? उन्हें चिल्लाकर बताएँ।

उन्हें फुसफुसाओ। अगर तुम मुझे एक बताओगे तो मैं तुम्हें एक बताऊँगा। ट्रेवर।

सभ्य, अच्छा। सभ्य और सामाजिक टोरा, जो हमने पिछली बार किया था, वे सभी चीजें हैं जो समाज में हमारे काम करने के तरीके से संबंधित हैं। मैरी, दूसरा क्या है? हाँ, नैतिक, नैतिक, वे नैतिक अनिवार्यताएँ, वे चीजें जो संस्कृतियों, समय-सीमाओं आदि में लागू होती हैं।

बेशक, मैट, आज हम किस स्पष्ट चीज़ से शुरुआत कर रहे हैं? अनुष्ठान और औपचारिकता। यह अच्छा है, ठीक है। यह हमें अनुष्ठान और प्रतीक की चर्चा पर ले आता है।

और मैं यहाँ शुरू से ही कुछ कहना चाहता हूँ। मुझे पता है कि हम सभी अलग-अलग संदर्भों और अलग-अलग पूजा शैलियों से आते हैं। अगर हम नियमित रूप से पूजा सेवाओं में भाग लेते हैं, जैसा कि मैं हमें करने के लिए प्रोत्साहित करूँगा, तो हम में से हर कोई अनुष्ठान में शामिल होता है।

इसलिए पीछे बैठकर यह मत कहिए कि, ओह, मैं एंग्लिकन चर्च नहीं जाता, या मैं रोमन कैथोलिक चर्च नहीं जाता, या मैं एपिस्कोपेलियन चर्च या लूथरन चर्च नहीं जाता, इसलिए मैं अनुष्ठान में शामिल नहीं होता। हर जगह जहाँ आप पूजा करते हैं, वहाँ कोई न कोई अनुष्ठान होता है। आप चैपल की ओर चलते हैं; खैर, हम आज ऐसा नहीं करने जा रहे हैं क्योंकि आज सुबह चैपल नहीं है, लेकिन वहाँ अनुष्ठान है।

आप जानते हैं, आप खड़े होते हैं, और प्रशंसा बैंड शुरू होता है, और हम शायद तीन गानों के लिए प्रशंसा बैंड गाते हैं। आमतौर पर, यह तीन होता है, है न? कभी-कभी चार होते हैं यदि वे छोटे होते हैं। अंतिम छंद आमतौर पर बिना वाद्ययंत्रों के होता है।

इसे शांत करो। वहाँ अनुष्ठान है, वहाँ कुछ चीज़ें हैं जो डिज़ाइन की गई हैं। यह उतना ही अनुष्ठानिक है जितना कि किसी भी तरह के धार्मिक चर्च में होता है क्योंकि हमें अनुष्ठान की आवश्यकता है।

हमें अपने विचारों को निर्देशित करने और खुद को ऐसी स्थिति में ले जाने में मदद करने के लिए इसकी आवश्यकता है जहाँ हम पूजा करते हैं। और फिर, निश्चित रूप से, यह इस बात पर निर्भर करता है कि किस तरह के प्रतीकों का उपयोग किया जा रहा है। प्रथम नियम की पूजा, जिस विषय पर हम आज बात करने जा रहे हैं, वह प्रतीकवाद, प्रतीकवाद और अनुष्ठान से भरा हुआ है।

इसमें बहुत सी बातें छिपी हुई हैं और हम उनसे सीख सकते हैं, भले ही हमारे खास रीति-रिवाज़ यहाँ-वहाँ कुछ हद तक बदल सकते हैं। मुझे इस बारे में कुछ और कहना है। लेविटस एक दिलचस्प किताब है।

मैंने यह पहले भी कहा है, और मुझे लगता है कि आपने इसे डॉ. विल्सन की किताब में पढ़ा होगा, लेकिन जब कोई रूढ़िवादी यहूदी बच्चा, या शायद रूढ़िवादी भी, या जो भी हो, कोई ऐसा व्यक्ति जो अपने धर्म को गंभीरता से ले रहा है, जब वह बच्चा वास्तव में बाइबल का अध्ययन करना शुरू करता है, तो वे निर्गमन जैसे मज़ेदार भागों से शुरू नहीं करते हैं। वे लेविटस से शुरू करते हैं। वे लेविटस से शुरू करते हैं।

क्या यह दिलचस्प नहीं है? यह वह किताब है जिसे हम आखिरी समय तक टालते रहे। वे वहाँ से शुरू करते हैं, इसका कारण वह है जिसका हमने दूसरे दिन उल्लेख किया था, और वह है

लैव्यव्यवस्था में, हम परमेश्वर की पवित्रता पर अत्यधिक जोर देते हैं। ठीक है, यह बार-बार वहाँ है।

ऐसा करो क्योंकि मैं पवित्र हूँ। तुम पवित्र बनो क्योंकि मैं पवित्र हूँ। और फिर, बेशक, बलिदान से जुड़ी हर चीज़ यही सबक सिखाती है।

अब, कभी-कभी हम लेविटस को देखते हैं और सोचते हैं, आह, मैं यह सब कैसे एक साथ रखूँ? खैर, शायद यह हमें इसे थोड़ा सा विभाजित करने में मदद करता है, और मेरे पास यहाँ कुछ सुझाव हैं, यदि आप चाहें तो कुछ व्यापक रूपरेखा के संदर्भ में। अध्याय एक से 10, जिसके बारे में हम आज बहुत अधिक विस्तार से बात करने जा रहे हैं। अध्याय एक से 10 बलिदान और पुरोहिताई के समन्वय के बारे में बात करते हैं, ठीक है? तो यह विशेष रूप से बात कर रहा है, जैसा कि मैं आपके लिए संकेत करता हूँ, पवित्र व्यक्ति के मार्ग के बारे में, परमेश्वर के पास पहुँचने के बारे में।

एक बार जब आप अध्याय 11 से शुरू करते हैं और वास्तव में 27 तक जाते हैं, तो कुछ चीज़ें इसमें शामिल होती हैं, लेकिन मुख्य रूप से 11 से 27 तक, हम उस बारे में बात कर रहे हैं जिसे कुछ विद्वान पवित्रता का मार्ग कहते हैं। दूसरे शब्दों में, सारा जीवन ईश्वर की उपस्थिति में जिया जाता है, ठीक है? इसलिए, हमें जो बात ध्यान में रखनी चाहिए वह यह है कि, हाँ, हम अच्छी तरह से जानते हैं कि ईश्वर अभी और यहीं हमारे साथ मौजूद है। वह अच्छी तरह से जानता है कि आप क्या सोच रहे हैं और आप अभी कितने ऊबे हुए हैं, ठीक है? चाहे कुछ भी हो, वह हमारे साथ मौजूद है।

लेकिन प्रथम नियम में और इसी तरह हमारी संस्कृति में भी ऐसे समय और स्थान हैं। ऐसे समय और स्थान हैं जो आराधना के लिए अलग रखे गए हैं। और इसलिए पवित्र व्यक्ति के पास जाने का तरीका उन संदर्भों में परमेश्वर के पास पहुँचने के बारे में बात कर रहा है क्योंकि वे संदर्भ हमें यह याद दिलाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं कि वह अपनी महिमा और अपनी उत्कृष्टता और अपनी परम पवित्रता और अपने पूर्ण घृणा, पाप के प्रति पूर्ण घृणा के संदर्भ में कौन है, जिसे हम अक्सर भूल जाते हैं।

अब, मैं अभी बहुत ज़्यादा बात नहीं करूँगा, लेकिन आप में से कुछ लोग जानते हैं कि, मैं सही शब्द भी नहीं सोच सकता, यह देखना कितना भयानक है कि हमारे चैपल में क्या चल रहा है, उस जगह पर जो उस विशेष पवित्र समय और पवित्र स्थान के लिए अलग से बनाई गई है जहाँ भगवान के पास जाने का स्थान है। और मैंने हाल ही में बालकनी का आनंद लेने का बीड़ा उठा लिया है। और वहाँ जो कुछ चल रहा है वह वास्तव में बहुत दुखद है।

लेकिन अपने भाई-बहनों की रक्षा खुद करो क्योंकि वे लोग अपने ऊपर, मैं कहूँगा, दिल की कठोरता ला रहे हैं। और मुझे एहसास है कि मेरे लिए यह कहना एक भयानक बात है, लेकिन जब मैं वहाँ होता हूँ तो यह निश्चित रूप से ऐसा ही लगता है। इसलिए आगे बढ़ो और लोगों को प्रेरित करो।

मुझे पता है कि नीचे क्या होता है। अगर वे खा रहे हैं या पी रहे हैं या बात कर रहे हैं या अपना आईपॉड चला रहे हैं या कुछ और, तो वह वहां नहीं होना चाहिए। शायद वह दोपहर चार बजे वहां होना चाहिए।

यह पवित्र समय, पवित्र स्थान के लिए निर्दिष्ट नहीं है। यह हमारे चैपल के दिनों में नहीं होना चाहिए। ठीक है, अब मेरे साबुन के डिब्बे के बारे में इतना ही काफी है।

आज आपने पवित्र स्थान, पुरोहिताई, बलिदान के बारे में जो पढ़ा है, उसमें एक बहुत बड़ा विरोधाभास छिपा है। सबसे पहले, विरोधाभास क्या है? चलिए इसे समझ लेते हैं। कोई मेरे लिए विरोधाभास को परिभाषित करे।

वेबस्टर होने की ज़रूरत नहीं है, बस मुझे एक अच्छी किस्म की परिभाषा बताइए। सारा, क्या यह एक हाथ ऊपर है? हाँ, आप इसे आजमाएँ। हाँ, दो चीज़ें जो सतह पर, बिल्कुल भी एक साथ नहीं लगती हैं।

उन्हें एक साथ रखा जा रहा है, लेकिन वे एक दूसरे से थोड़ा लड़ते हैं। और आपको इस बारे में सोचना होगा कि यह कैसे है कि वे दोनों जो कुछ भी हम देख रहे हैं उसका अभिन्न अंग हैं। खैर, प्रथम नियम में आराधना दृश्य के संदर्भ में विरोधाभास क्या है? सोचें कि आपने पवित्र स्थान के बारे में क्या पढ़ा है और फिर बलिदान के बारे में क्या पढ़ा है।

आइए देखें कि क्या हम इस विरोधाभास को थोड़ा-बहुत समझ सकते हैं। कोई इस पर विचार करना चाहता है? समय पर विचार नहीं करना चाहता, है न? यह पवित्र स्थान किससे बना है? वह सारा धन जो वे मिस्र से ले गए, याद है? यह पवित्र स्थान सुंदर है। यह ईश्वर की उत्कृष्ट प्रकृति और उसके पारलौकिक स्वभाव के बारे में कुछ दर्शाता है।

और उस अभयारण्य में एक विस्मय और एक महिमा थी। जब आप किसी जानवर को मारते हैं तो क्या होता है? अगर आप रुककर सोचें तो उस जगह पर खून और आंते बिखरी हुई हैं, आप जानते हैं, हम ऐसा ज़्यादा नहीं देखते हैं जब तक कि आप किसी खेत में पले-बढ़े न हों और आपको मुर्गियों को मारने की आदत न हो। लेकिन यह एक गड़बड़ है।

इस एक जगह पर भगवान की राजसी सुंदरता को दर्शाया गया है जो वहां मौजूद है और साथ ही खून-खराबा, गंदगी, भयावहता और मृत्यु की पीड़ा भी। और, बेशक, पाप ही उस मौत का कारण है। हम इसके बारे में थोड़ी देर में और बात करेंगे, लेकिन हमें यह देखना चाहिए कि जब हम पवित्र स्थान और बलिदान के संबंध में इस चीज़ को देखते हैं, तो विरोधाभास को जानें, और फिर महसूस करें कि, बेशक, यह भगवान ही है जो उस गंदगी, उस भयावहता, उस दर्द और उस पीड़ा को अपने ऊपर लेता है।

और फिर शायद इससे हमें बेहतर तस्वीर मिल जाएगी। जैसा कि मैंने कहा, आज हम जो पढ़ रहे हैं या जो हमने आज के लिए पढ़ा है, उसमें सभी तरह के प्रतीकवाद निहित हैं। और अगर कुछ नहीं, तो मुझे उम्मीद है कि आपको उन चीज़ों की थोड़ी-बहुत फिर से सराहना मिलेगी जिन्हें हम अक्सर अपनी जुबान से यूँ ही निकल जाने देते हैं।

यीशु मेरे पापों के लिए मरा। यह बिलकुल सच है, लेकिन इसका मतलब क्या है, इसे समझें। इस्राएलियों की उपासना पद्धति में शिक्षा थी और वह शिक्षा उन्हें परमेश्वर और खुद के बारे में कुछ देखने में मदद करने के लिए डिज़ाइन की गई थी।

और हम इससे सीख सकते हैं। ठीक है, इस पर और भी बहुत कुछ कहना है। ईश्वर के पास जाने के निहितार्थ।

जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, यह पूरा दृष्टिकोण टोरा के अनुष्ठानिक अनुष्ठान टोरा का एक विशिष्ट हिस्सा है। और इसका संबंध उन समयों से है जिन्हें पवित्र समय के रूप में नामित किया गया था और, निश्चित रूप से, पवित्र स्थान, जो उनके संदर्भ में तम्बू था। बेशक, ऐसे पहलू हैं जो बदलते हैं।

और हमारे चर्च के संदर्भ कुछ अलग हैं, जाहिर है। मैं सावधान हूँ, मैं बस एक और बात कहूँगा और फिर मैं सच में वादा करता हूँ कि मैं अपने साबुन के डिब्बे से उतर जाऊँगा। क्या किसी ने यहाँ एनी डिलार्ड को पढ़ा है? उसने कुछ वाकई दिलचस्प चीजें लिखी हैं और मैं उसे एक आकर्षक लेखिका के रूप में आपके लिए सुझाता हूँ।

लेकिन उन्होंने एक किताब लिखी है जिसका नाम है टीचिंग ए स्टोन टू टॉक। क्या यह उन किताबों में से एक है जो आपने पढ़ी हैं, मैरी? क्या आपको यह भाग याद है? मैं इसे खत्म करने जा रहा हूँ क्योंकि मैं वास्तव में, वास्तव में, वास्तव में इसका सार बताने जा रहा हूँ। लेकिन टीचिंग ए स्टोन टू टॉक के हिस्से के रूप में, वह पूजा के बारे में बात करती है।

और वह कुछ इस तरह कहती है। अगर हमें पता होता कि रविवार की सुबह हम किसके सामने जा रहे हैं, ठीक है, अगर हमें पता होता कि रविवार की सुबह हम किसके सामने जा रहे हैं, तो हम हेलमेट और फ्लैक जैकेट पहनकर वहाँ जाते, और हम अपनी सीटों पर बंधे होते। लेकिन इसके बजाय, हम एक तरह से झुक जाते हैं और, आप जानते हैं, गपशप करते हैं और शायद एक कप कॉफी पीते हैं।

हम बहुत ज़्यादा परिचित हो गए हैं। भगवान, हाँ, हमारे सबसे करीबी दोस्त हैं। और फिर भी वह भगवान हैं।

फिर भी वह ईश्वर है। खैर, पूरी उपासना व्यवसाय की केंद्रीय विशेषता बलिदान थी। और, ज़ाहिर है, हमें इसके बारे में अभी और भी बहुत कुछ कहना है।

लेकिन आइए यहाँ कुछ बातों पर गौर करें। ये दो शब्द हैं जिनका इस्तेमाल अक्सर नहीं किया जाता। और वास्तव में, आप जानते हैं, वे शायद कुछ हलकों में सही नहीं हैं क्योंकि वे खून बहाने की बात करते हैं, और वे भगवान के क्रोध के बारे में बात करते हैं।

और कभी-कभी लोग ऐसी बातें सुनना पसंद नहीं करते, लेकिन यहाँ बात यह है। लैव्यवस्था 17:11 मूल रूप से कहता है कि एक प्राणी का जीवन उसके खून में है। और जब आप किसी प्राणी का खून बहाते हैं, तो वह बलि का शिकार मूल रूप से मेरे जीवन की जगह ले रहा है।

मेरे पाप के कारण मेरा जीवन खो गया है। आप वापस जाकर उस आयत को पढ़ सकते हैं और फिर इब्रानियों 9:22 देख सकते हैं, जिसमें कहा गया है, बिना खून बहाए पापों की क्षमा नहीं होती। ठीक है, तो प्रायश्चित एक ऐसा शब्द है जिसे आप जानना चाहते हैं।

यह एक बहुत बढ़िया शब्द है जो किसी परीक्षा के बहुविकल्पीय भाग में दिखाई देगा। हो सकता है, है न? खून बहाकर परमेश्वर के क्रोध को शांत करना। फिर से, आप जानते हैं, हम अपनी पश्चिमी संस्कृति में सोचते हैं, ओह, खून बहाने के बारे में बात ही क्यों करें? यह सोचना कितना भयानक है।

हम भूल गए हैं कि वास्तव में, जैसा कि पॉल ने कहा, पाप की मजदूरी मृत्यु है। और इसलिए जब वह जानवर मरता है, तो वह मेरी जगह ले रहा है। यह मेरी जगह ले रहा है, है न? प्रायश्चित, एक और संबंधित शब्द, बिल्कुल वैसा ही नहीं है।

वास्तव में, धर्मशास्त्रीय हलकों में इस बात पर बड़ी बहस चल रही है कि इनमें से एक का इस्तेमाल दूसरे के विपरीत किया जाए या नहीं। मुझे लगता है कि ये दोनों ही बहुत महत्वपूर्ण हैं। प्रायश्चित का मतलब है पाप को रद्द करना।

बहाए गए इस खून की वजह से पाप रद्द हो गया है। तो, एक मामले में, यह विशेष रूप से परमेश्वर के क्रोध को शांत करने की बात कर रहा है, और दूसरा आपके पापों के मेरे पाप को रद्द करना है। और मैंने अपनी अगली पंक्ति पहले ही कह दी है।

शायद हमें वापस आकर यह समझने की ज़रूरत है कि बलिदान में क्या शामिल है। फिर, फिर से, ग्राफिक रूप से चित्रित करके, हम देखते हैं कि पाप किस तरह की गड़बड़ी पैदा करता है। यह बस होता है।

और भले ही हम इसे सफेद करने की कोशिश करते हैं, और हम इसे किसी तरह से दबा देते हैं, और हम किसी को नहीं बताते हैं, और वगैरह, वगैरह, वगैरह, पाप एक गड़बड़ी का कारण बनता है। और ये बलिदान उस तरह की बात को दर्शाते हैं। खैर, बलिदान की प्रक्रिया को कारगर बनाने के लिए, आपको न केवल पवित्र स्थान की आवश्यकता थी, जिसके बारे में हम थोड़ी देर में बात करने जा रहे हैं, बल्कि पापी मनुष्यों और ईश्वर के बीच उनकी पारलौकिक पवित्रता में मध्यस्थ के रूप में सेवा करने के मामले में पुरोहिताई की भी आवश्यकता थी।

तो, ये सारी चीजें एक विशाल प्रतीकात्मक चित्र का हिस्सा बन जाती हैं। खैर, मैंने पहले ही यह बताने की कोशिश की है। हम अपने बारे में क्या सीखते हैं? खैर, हम पापियों के रूप में, मूल रूप से, प्रतिदिन गड़बड़ियाँ कर रहे हैं।

हम परमेश्वर के बारे में क्या सीखते हैं? खैर, हम निश्चित रूप से सीखते हैं कि वह अपनी परम पवित्रता में अलग रहता है, और फिर भी, जैसा कि हम देखने जा रहे हैं, वह हमारे बीच रहने के लिए उतरता है। यही इस सब की खूबसूरती है। लेकिन इसके बारे में थोड़ी देर में और बात करेंगे।

खैर, मैंने जो कहा है, उसके अनुसार हम इन दोनों की तुलना कैसे कर सकते हैं? आइए पहले कुछ बातों पर नज़र डालें। कौन सी अवधारणाएँ समान हैं? दूसरे शब्दों में, मैंने आपको कुछ सिद्धांत देने की कोशिश की है, और आपको उन्हें निकालने में सक्षम होना चाहिए और अब मूल रूप से उन्हें मुझे वापस बताना चाहिए। आज भी आपके और मेरे लिए नए नियम के विश्वासियों के रूप में कौन सी बातें सच हैं जो तब सच थीं जब ये शब्द मूसा के माध्यम से सिनाई में इस्राएलियों को बताए गए थे? क्या अभी भी सच है? इसे फिर से बताओ, लकी।

हमें एक पुजारी की जरूरत है, एक उच्च पुजारी की जरूरत है। और, बेशक, यीशु ही वह व्यक्ति है जो यह कर चुका है, लेकिन हमें एक मध्यस्थ की जरूरत है। हमें अभी भी एक मध्यस्थ की जरूरत है।

और क्या? बलिदान का खून बहाया जा रहा है। इब्रानियों 9:22 जिसका मैंने कुछ समय पहले आपके लिए हवाला दिया था, खून बहाए बिना पापों की क्षमा नहीं होती। और इब्रानियों 12:28 और 29 क्या कहता है? यह फिर से, शायद उतना दोस्ताना नहीं है, जितना हममें से कुछ लोग इसे पसंद कर सकते हैं, लेकिन मैं सुझाव दूंगा कि यह काफी महत्वपूर्ण अंश है।

मैं इसे आपके लिए पढ़कर सुनाता हूँ। चूँकि हम और यह इब्रानियों की पुस्तक है, है न? यह अब पुनरुत्थान के बाद की पुस्तक है, और चर्च का गठन हो चुका है, इत्यादि। आइए ध्यान से सुनें कि इब्रानियों के लेखक ने क्या कहा है।

चूँकि हम एक ऐसा राज्य प्राप्त कर रहे हैं जिसे हिलाया नहीं जा सकता, इसलिए हमें आभारी होना चाहिए और इसलिए भय और भय के साथ परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है। यह वह घिनौना मार्सियोनाइट ओल्ड टेस्टामेंट परमेश्वर नहीं है जिसके बारे में वह बात कर रहा है। यह एक न्यू टेस्टामेंट कथन है।

हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है। आइए हम भय और विस्मय के साथ उसकी आराधना करें। इसलिए जब हम उसकी उपस्थिति में आते हैं, तो हमें परमेश्वर का उचित भय रखने की आवश्यकता है।

मैं किसी भी तरह से मसीह के माध्यम से ईश्वर के साथ संगति की सुंदरता और उससे मिलने वाले आनंद को कम नहीं कर रहा हूँ, लेकिन यह सबसे अच्छा तब होता है जब हम समझते हैं कि ईश्वर कौन है और वास्तव में उसके प्रति स्वस्थ भय रखते हैं। तो शायद हम इसे थोड़ा सा पोषित कर सकते हैं। क्या बदल गया है? खैर, चूँकि हम अभी भी इब्रानियों में हैं, इसलिए मैं आपको कुछ और अंश पढ़कर सुनाता हूँ जो काफी महत्वपूर्ण हैं।

यह कुछ समय पहले लकी द्वारा कही गई बात को आगे बढ़ाता है। 7:24 और उसके बाद, क्योंकि यीशु हमेशा के लिए जीवित रहता है, उसके पास स्थायी पुजारी है। यह अध्याय सात का अंत है, जहाँ इब्रानियों के लेखक ने उस मेल्कीसेदेक विषय पर बात की है जिसके बारे में हमने उत्पत्ति 14 के बारे में बात करते समय बात की थी, ठीक है? इसलिए, श्लोक 25, वह उन लोगों को पूरी तरह से बचाने में सक्षम है जो उसके माध्यम से परमेश्वर के पास आते हैं क्योंकि वह हमेशा उनके लिए मध्यस्थता करने के लिए जीवित रहता है।

यीशु हमारे महान महायाजक हैं। मैं पढ़ना जारी रखूँगा। ऐसा महायाजक हमारी ज़रूरतों को पूरा करता है, जो पवित्र और निष्कलंक और शुद्ध है और पापियों से अलग है, स्वर्ग से ऊपर ऊँचा है।

अन्य महायाजकों के विपरीत, यह बदलाव है, है न? हमें अभी भी एक महायाजक की आवश्यकता है, लेकिन यीशु नाटकीय रूप से अलग है। अन्य महायाजकों के विपरीत, उसे दिन-प्रतिदिन बलिदान चढ़ाने की आवश्यकता नहीं है, पहले अपने पापों के लिए, फिर लोगों के पापों के लिए। जब उसने खुद को अर्पित किया तो उसने हमारे पापों के लिए एक बार और हमेशा के लिए बलिदान कर दिया।

तो, बहुत स्पष्ट रूप से, हमें इस बात का संकेत मिल गया है कि यह सब मसीह में फलित हो रहा है। और फिर एक और अंश जो पढ़ने लायक है। अध्याय 10, श्लोक 10।

हम यीशु मसीह के शरीर के बलिदान के माध्यम से हमेशा के लिए पवित्र हो गए हैं। और फिर श्लोक 12 में, जब इस महायाजक, यीशु ने पापों के लिए हमेशा के लिए एक बलिदान चढ़ाया, तो वह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठ गया। तो, यहाँ हमें जो तस्वीर मिलनी चाहिए, और मुझे पता है कि मैं घर पर जोर दे रहा हूँ, वहाँ बहुत ही गहन सत्य हैं जो आगे बढ़ते हैं।

बलिदान, मध्यस्थ और परमेश्वर की पवित्रता की आवश्यकता है, और फिर भी यीशु ने एक समय में यह सब किया है। ठीक है? और इब्रानियों के लेखक इस बारे में विशेष रूप से बात कर रहे हैं। खैर, इसे ध्यान में रखते हुए, आइए हम पवित्र स्थान पर चलते हैं।

वैसे, मैंने दो अंश पढ़े हैं जो यीशु द्वारा हमारे पापों के लिए मध्यस्थता करने के बारे में बात करते हैं। क्या आपने इसे समझा? क्या आपने इसे सुना? इसलिए यह कहना और इसका मतलब निकालना महत्वपूर्ण है, न कि केवल एक छोटे से टैग के रूप में, बल्कि यीशु के नाम पर प्रार्थना करना क्योंकि वह मध्यस्थता कर रहा है।

आप जानते हैं, कभी-कभी चर्चा होती है, ओह, हमें इसे वहाँ रखना होगा। खैर, आप इसे वहाँ सिर्फ नहीं रख सकते। जब हम कहते हैं कि हम माँग रहे हैं तो इसका कुछ मतलब होता है; हम परमेश्वर से ऐसा करने के लिए विनती कर रहे हैं और यीशु के नाम पर उसे धन्यवाद दे रहे हैं।

यीशु हमारे मध्यस्थ हैं। इसलिए, इसका गहरा धार्मिक महत्व है। ठीक है, चलो थोड़ा सा अभयारण्य के बारे में बात करते हैं।

ध्यान दें कि पवित्र स्थान को कितनी जगह दी गई है। अगर आप पढ़ रहे हैं, तो आप तेजी से आगे बढ़ते हैं, और अचानक, अध्याय 24 के अंत में, आप ब्रेक लगाते हैं और कहते हैं, आह, अध्याय 25 में मुझे क्या मिला? क्योंकि 25 से लेकर 40 तक, यह पवित्र स्थान के बारे में बहुत कुछ है, जिसमें सुनहरे बछड़े की घटना पर तीन अध्याय हैं। लेकिन इस जगह को दी गई सारी जगह पर ध्यान दें।

क्या आपको लगता है कि यह महत्वपूर्ण है? यह महत्वपूर्ण है। यह बहुत महत्वपूर्ण है। और हम थोड़ी देर में इस बारे में बात करेंगे कि क्यों।

इस बात पर भी ध्यान दें कि हमने स्थान निर्धारण के बारे में क्या पाया है। 10 आज्ञाओं के दिए जाने के बाद, टोरा के उस पूरे भाग के बाद जो हमारे पास है, विशेष रूप से अध्याय 21 से 23 में, वाचा समारोह की पुष्टि के बाद, जहाँ मूसा और इस्राएल के बुजुर्ग और नादाब और अब्बी जो पहाड़ पर जाते हैं और वे परमेश्वर के साथ भोजन करते हैं, ऐसा कहा जाता है। वे वाचा का जश्न मनाते हुए एक दावत मनाते हैं।

उसके बाद, फिर हमारे पास अभयारण्य के लिए निर्देश हैं। ठीक है? अध्याय 25 से शुरू करते हैं। तो यह जगह तैयार हो रही है।

अब जबकि वाचा बन चुकी है, अब जगह तैयार हो रही है। और फिर, लेवितस से शुरू करते हुए, हमें उस जगह पर होने वाली बलि मिल गई है। सोने के बछड़े पर अध्याय सबसे दुखद अध्यायों में से हैं, शायद ईडन गार्डन के बाद।

और मैं बस कुछ कारण बताना चाहता हूँ कि यह क्यों सच है। मूसा पहाड़ पर है। उसे उस स्थान के बारे में निर्देश मिल रहे हैं जहाँ परमेश्वर उनके बीच निवास करने वाला है।

आप जानते हैं, यह संगति बहुत खूबसूरत होने वाली है। उसे हारून के बारे में निर्देश मिल रहे हैं और वह क्या करने जा रहा है और हारून क्या पहनने जा रहा है। और उस समय, हारून क्या कर रहा है? वह पहाड़ की तलहटी में लोकप्रिय अशांति से प्रभावित होकर नीचे बैठा है।

और वह एक सुनहरा बछड़ा बना रहा है। बेशक, जब मूसा उसे चुनौती देता है तो वह क्या कहता है? यह सच्चाई को थोड़ा-बहुत तोड़-मरोड़ कर पेश करने जैसा है। चेल्ली।

हाँ, बछड़ा तब बाहर आया जब हमने यह सब कुछ आग में डाला। तो, एरन झूठ बोल रहा है। वह इस मामले में सच नहीं बोल रहा है।

अब, इस बात पर पूरी चर्चा चल रही है कि यह सुनहरा बछड़ा क्या था और यह किसका प्रतिनिधित्व करता था। कुछ लोग कहते हैं, ओह, ठीक है, वे मिस्र के अपने देवताओं की ओर वापस जा रहे हैं क्योंकि मिस्र के कई देवताओं में से एक का यह रूप गोजातीय था। हालाँकि, जो हो रहा है वह शायद हारून के सोचने के तरीके से हो रहा है, क्योंकि वह ऐसा कहता है, यहाँ वह ईश्वर है जिसने तुम्हें मिस्र से बाहर निकाला है।

और हारून सोचता है कि वह इस बछड़े का रूप बनाकर उन्हें ईश्वर का एक प्रतिरूप प्रस्तुत कर रहा है। अब, ज़ाहिर है, उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। और यह मूर्तिपूजा का सबसे बुरा मामला है।

हारून ने बहुत ही सफलतापूर्वक पहली तीन आज्ञाओं को तोड़ा है, बिलकुल इसी तरह। बेशक, इसका मतलब है कि वाचा टूट गई है। जब मूसा पहाड़ से नीचे आता है, तो वह प्रतीकात्मक रूप से वाचा की पटियाओं को तोड़ देता है।

यहाँ इस स्थान के बारे में दिलचस्प बात यह है कि उस घटना के बाद, परमेश्वर क्या करता है? वह कहता है, मूल रूप से, इसे आगे बढ़ाओ और इसे बनाओ। मैं तुम्हारे स्थान पर, तुम्हारी उपस्थिति में, वैसे भी निवास करने जा रहा हूँ। अब, यह मूसा की ओर से उल्लेखनीय मध्यस्थता के परिणामस्वरूप आता है।

जैसा कि आप मूसा की प्रार्थना पढ़ते हैं, खास तौर पर अध्याय 33 और अध्याय 34 की शुरुआत में, मूसा अपने लोगों की ओर से अविश्वसनीय तरीके से मध्यस्थता कर रहा है। लेकिन परमेश्वर वास्तव में उनके बीच में रहने का निश्चय करता है। और जब वे पवित्र स्थान बनाते हैं, तो इसीलिए इसके लिए इतनी जगह दी जाती है।

निर्देश, टूटी हुई वाचा, और फिर भी परमेश्वर का उनके बीच वास करने का इरादा, पवित्रस्थान के वास्तविक निर्माण पर पाँच और अध्यायों द्वारा इंगित किया गया है। तो, यह अच्छी बात है। कोई और सवाल? वैसे, हम सोने के बछड़े पर पूरा एक घंटा बिता सकते हैं।

मुझे यह पता है। मुझे एक और बात कहने दीजिए। बहुत से विद्वान यह कहने की दिशा में जा रहे हैं कि हारून वास्तव में कुछ ऐसा बना रहा है जिसे वह ईश्वर मानता है, न कि किसी तरह की मिस्र की मूर्ति, इसका कारण करूबों का वर्णन है।

अब, आपको करूब याद है, है न? हमारे पास करूब थे, है न? और हम उन्हें फिर से देखने जा रहे हैं क्योंकि हम उन चीज़ों के बारे में बात करना शुरू करते हैं जो पवित्र स्थान की सजावट बनाने का अभिन्न अंग हैं। और वहाँ एक करूब था जिसे रखा गया था, वहाँ करूब थे जिन्हें गार्ड के रूप में ईडन गार्डन में रखा गया था। जब आप यहजेकेल अध्याय एक और 10 को देखते हैं, और हम कुछ महीनों में वहाँ पहुँचेंगे, और आप यहजेकेल के करूबों के विवरण को देखते हैं, उनके पास, और फिर से, यह मानवीय शब्दों में कुछ ऐसा है जो आकाशीय क्षेत्रों से आ रहा है, लेकिन उनका चेहरा एक बैल का है, है न? और पैर बछड़ों के पैरों जैसे हैं।

और इसलिए, ईश्वर की उपस्थिति के बारे में कुछ, आप जानते हैं, इसे ऊपर उठाते हुए क्योंकि करूब उस विस्तार के नीचे हैं, और फिर उसके ऊपर ईश्वर का सिंहासन है। इसके बारे में कुछ शब्दों में दर्शाया गया है, कम से कम, किसी तरह की बछड़े जैसी संरचना के रूप में, बेहतर शब्द की कमी के कारण। प्राचीन निकट पूर्व में, आप में से जो लोग डॉ. विक की कक्षा में रहे हैं, आप शायद यह पहले से ही जानते हैं: प्राचीन निकट पूर्व में, प्रमुख साम्राज्यों के प्रमुख राजाओं के प्रमुख सिंहासन कक्षों की रक्षा इन बड़े पत्थर के पंख वाले जीवों द्वारा की जाती थी।

और उन प्राणियों के लिए मूल शब्द करूब और केरूव से संबंधित है , ठीक है? तो, वहाँ भी कुछ संबंध हो सकते हैं। खैर, यह थोड़ा विषयांतर है जिसे हमें अभयारण्य तक ले जाने की आवश्यकता है। जब हम पाठ में इसके बारे में पढ़ते हैं, तो कुछ हिब्रू शब्द हैं जो समझने में सहायक होते हैं।

तो, सबसे पहले, इस जगह को मिकदाश कहा जाता है , जिसका मतलब वास्तव में अभयारण्य होता है क्योंकि इसका मतलब अलग होना होता है। हिब्रू शब्द कोडेश का मतलब पवित्र होता है, ठीक है? तो, यह इस जगह का वास्तविक वर्णन है, जो शब्द में ही संकेत देता है कि यह अलग है, अभयारण्य। और हमारे पास पक्षी अभयारण्य हैं, है न? वे ऐसी जगहें हैं जो अलग हैं, वन्यजीव अभयारण्य।

दूसरा शब्द वास्तव में इसके दूसरे पहलू का संकेत देता है क्योंकि यह एक हिब्रू शब्द से आया है जिसका अर्थ है निवास करना, एक पड़ोसी। पड़ोसी के लिए हिब्रू शब्द इस शब्द से संबंधित है, शाहीन , ठीक है? यह एक मिशकन है । तो, यह भगवान का निवास स्थान है।

अगर आप इसे इस तरह से कहें तो हमारा पड़ोसी कौन होगा, है न? और फिर, अंत में, मीटिंग का तम्बू, ओहेल मोएड। यहीं पर परमेश्वर मूसा से मिले और फिर जाहिर तौर पर बाद में हारून से। इस संबंध में मूसा के पास वास्तव में कुछ विशेष विशेषाधिकार हैं जिनके बारे में बताने के लिए हमारे पास समय नहीं है।

आइए थोड़ा आगे बढ़ें और उद्देश्यों के बारे में बात करें क्योंकि मैंने अभी जो कहा है, वह शब्दों के संदर्भ में हमें उद्देश्यों के बारे में कुछ बहुत मजबूत संकेत देता है। आप जानते हैं, ईडन के बाद जो हुआ, जिसके बारे में मैं अभी बात कर रहा था, वह यह है कि उस अद्भुत सामंजस्यपूर्ण रिश्ते के बीच एक पूर्ण अलगाव हो गया है, जहाँ भगवान ईडन के बगीचे में आदम और हव्वा के साथ चलते थे। पाप के बाद, उन्हें बाहर निकाल दिया गया, करूबों को वहाँ रखा गया।

अभयारण्य के साथ, हमें इस बात की शुरुआत मिलती है कि जब हम ईश्वर की उपस्थिति में एक साथ वापस आएं, जब ईडन का महाकाव्य अपने अंतिम चरमोत्कर्ष तक पहुँच जाएगा, तो यह कैसा होगा। लेकिन अभयारण्य उस दिशा में एक कदम है। यह उस दिशा में एक कदम है।

और इसलिए, परमेश्वर ने अपनी दया में अपने लोगों की उपस्थिति में रहने का चुनाव किया है। और यह एक उल्लेखनीय चुनाव है। और जैसा कि मैंने कुछ क्षण पहले कहा था, सोने के बछड़े और मूर्तिपूजा और टूटी हुई वाचा के संदर्भ में सभी चीजों के बावजूद, फिर भी, वह ऐसा कर रहा है।

यह भी, और शायद सबसे महत्वपूर्ण चीजों में से एक है, लोगों को अवतार के लिए तैयार करना। क्योंकि इम्मानुएल का क्या मतलब है? हमारे साथ परमेश्वर। और यशायाह अध्याय सात कहता है, तुम उसका नाम इम्मानुएल रखना।

और फिर इम्मानुएल अध्याय आठ में चार बार और आता है, ठीक है? परमेश्वर हमारे साथ है। और फिर, बेशक, हमारे पास यीशु का जन्म, अवतार, और वास्तव में, यूहन्ना अध्याय एक श्लोक

14 है, जो कहता है, क्या कोई जानता है कि यूहन्ना 1.14 क्या कहता है? यह एक नाटकीय कथन है। हम सभी ने इसे बहुत पढ़ा है, लेकिन यह एक नाटकीय कथन है।

यूहन्ना 1.1 क्या कहता है? शुरुआत में वचन था। ठीक है, हम समझ गए। और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।

तो, हम उस संदर्भ में शब्द और ईश्वर के अटूट बंधन के बारे में कुछ जानते हैं। 1.14 क्या कहता है? बस अपने से नीचे की ओर चलें, और शब्द देहधारी हो गया। और यहाँ अगला भाग है।

मेरा मतलब है, यहूदी दर्शकों के लिए यह काफी चौंकाने वाला है। यह काफी चौंकाने वाला है। शब्द देहधारी हुआ, लेकिन फिर यह क्या कहता है? हाँ, और हमारे बीच में रहा, और यूनानी शब्द है, और हमारे बीच में डेरा डाला।

एक पल के लिए भी यह मत सोचिए कि यूहन्ना के पाठकों के पास यह समझने के लिए पूरी पृष्ठभूमि नहीं होगी कि हमें परमेश्वर की उपस्थिति मिली है, यह तम्बू में थी, अब देहधारी वचन में, हमारे बीच तंबू बनाकर। वचन को वहाँ जानबूझकर चुना गया है। और, बेशक, फिर यह उसकी महिमा के प्रकटीकरण के बारे में भी बात करता है।

जॉन ने कहा, यह परमेश्वर के तम्बू के संदर्भ में स्वयं को प्रकट करने का संदर्भ है। यह स्वर्गीय निवास की पूर्वसूचना है। मैं आपको ये अंश नहीं पढ़कर सुनाऊंगा, लेकिन स्पष्ट रूप से, और हमने इसे पहले ही देखा है, टोरा की इस पूरी प्रणाली में और विशेष रूप से अब हमारे अनुष्ठान टोरा के साथ जो दिख रहा है, वह हमें बहुत ही छोटे तरीके से एक तस्वीर दे रहा है कि जब हम स्वर्ग को पुनःस्थापित करेंगे तो क्या होगा।

तो, आप उन संदर्भों को देख सकते हैं। और फिर मैंने इसे सीधे गॉर्डन ह्यूजेनबर्गर से चुराया है, जो कहते हैं, यदि आप तम्बू को देखते हैं, जो बाद में मंदिर बन जाता है, तो यह वास्तव में, कुछ मायनों में, ईडन की ओर हमारे वापस जाने के रास्ते की तस्वीर है, जैसा कि मैंने पहले कहा था। यह वह रास्ता है जिसे हम ईडन की ओर अपना रास्ता बनाते हुए देखते हैं, क्योंकि ईश्वर की उपस्थिति हमारे साथ है, और मंदिर के रास्ते में भी है।

मुझे लगता है कि हम इसे अगली संरचना में यहाँ देखेंगे। ओह, ठीक है, मैं एक मिनट में वहाँ पहुँच जाऊँगा। तो, मैं उस वाक्य को समाप्त करूँगा।

जैसे ही कोई उपासक पर्दे के पार वेदी की ओर जाता है, पुजारी रक्त लेता है और उसे वेदी पर छिड़कता है। यह सब जीवन के वृक्ष, जीवन के स्रोत पर वापस आने का एक अभिन्न अंग है। खैर, किसी भी दर पर, आइए संरचना के बारे में बात करते हैं, और फिर हम एक और आरेख देखेंगे।

बबूल की लकड़ी से बने फ्रेम। बबूल की लकड़ी सिनाई क्षेत्र में उगती है। यह पोस्टर का पेड़ है।

वास्तव में, यह संभवतः एकमात्र असली पेड़ है। और यह बड़ा नहीं है, यही कारण है कि उनके फ्रेम भी बहुत बड़े नहीं हैं। आप में से जो लोग इसमें रुचि रखते हैं, उनके लिए भौगोलिक दृष्टिकोण से बस एक त्वरित नोट, या यदि आप नहीं भी हैं, तो भी आप इसे वैसे भी सुनेंगे।

बबूल के पेड़ों की जड़ें बहुत गहरी होती हैं, बहुत गहरी जड़ें, क्योंकि सिनाई प्रायद्वीप में आपको प्रति वर्ष अधिकतम चार इंच बारिश मिलती है, और फिर भी ये पेड़ जीवित रहते हैं, इसलिए वे जड़ों को बहुत नीचे तक फैलाते हैं, ताकि भले ही बहुत अधिक बारिश न हो, वे जीवित रह सकें। इसलिए वे एक मजबूत पेड़ हैं, और आपके तम्बू के लिए फ्रेम बबूल की लकड़ी से बनाए जा रहे हैं। और फिर, निश्चित रूप से, इसके चारों ओर पर्दे, जो इंगित करते हैं, फिर से, प्रतीक हैं।

परमेश्वर का निवास अलग रखा जाएगा। हाँ, यह जनजातियों से घिरा हुआ है। हाँ, वह उनके बीच में निवास कर रहा है, और फिर भी यह अलग रखा गया है, और पर्दे इसका प्रतीक हैं।

वास्तविक पवित्र स्थान के भीतर ही, जब आप आंगन से गुजरते हैं, तो आपको तम्बू मिलता है जिसमें पर्दों की चार परतें होती हैं, लेकिन आपके पास पवित्र स्थान और सबसे पवित्र स्थान होता है, और हम थोड़ी देर में उसके साज-सामान के बारे में बात करेंगे। करूब, मैंने पहले ही उनका उल्लेख किया है। पर्दे पर, विशेष रूप से, जो पवित्र स्थान को सबसे पवित्र स्थान से अलग करता है, करूब होते हैं।

फिर से, जीवन के वृक्ष पर वापस जाने का प्रतीक, हमें ईडन की याद दिलाता है, हमें याद दिलाता है कि करूब कुछ मायनों में, भगवान की उपस्थिति की रक्षा करने और पहरा देने का काम करते हैं। खैर, आइए इस बारे में थोड़ी बात करें कि इसके अंदर क्या है। फिर से, हमारी संरचना के बारे में सोचते हुए, और मैं एक पल में फिर से एक आरेख बनाने जा रहा हूँ, लेकिन संरचना सबसे पवित्र स्थान, आंतरिक गर्भगृह और फिर पवित्र स्थान है।

सबसे पवित्र स्थान के भीतर वाचा का संदूक है, इसे इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह वह संदूक या बक्सा है, जिसमें गवाही की पटियाएँ रखी जाती थीं। है न? तो, जिस वाचा के बारे में हम बात कर रहे हैं, उसे याद करते हुए, वाचा की दो पटियाएँ बनाई गई थीं, एक सुजैन के लिए, एक लोगों के लिए, वाचा की पटियाएँ इस संदूक में रखी गई थीं। इसीलिए इसे संदूक कहा जाता है।

हारून वाचा का हिब्रू शब्द है। अब, जैसा कि आप पाठ में पढ़ते हैं, न केवल आपके पास सबसे पवित्र स्थान और पवित्र स्थान के बीच के पर्दे पर वे करूब हैं, और जैसा कि मैंने यहाँ संकेत दिया है, वे संदूक के आवरण को भी ढक रहे हैं, और संदूक के आवरण को प्रायश्चित आवरण कहा जाता है। किप्पुराह, किप्पुरिट, मुझे लगता है, यहाँ शब्द है, और आप सुनेंगे, यदि आपके यहूदी मित्र उस शब्द में हैं, किप्पुरिट, तो आप किप्पुर सुनेंगे, और शायद आप योम किप्पुर के बारे में जानते हों।

न्यूयॉर्क शहर का उच्चारण, योम किप्पुर। शायद आपने यह सुना हो, लेकिन वास्तव में, योम किप्पुर, है न? तो, यह प्रायश्चित के दिन के इस पूरे विचार से संबंधित है। हम इसके बारे में, भगवान की इच्छा से, शुक्रवार को और बात करेंगे।

तो, प्रायश्चित का आवरण इस सन्दूक के ऊपर है जिसमें गोलियाँ हैं। सबसे पवित्र स्थान से बाहर निकलते हुए, और फिर, कुछ ही देर में आने वाला आरेख, सबसे पवित्र स्थान के उत्तर की ओर एक मेज़ है। और यह मेज़ खास तौर पर रोटी रखने के लिए है।

ठीक है, रोटी परोसते हुए, आप सोच रहे हैं, रोटी? खैर, याद रखें कि उस समय, आप जानते हैं, किसी के भरण-पोषण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रोटी से आता था। लोगों ने अनुमान लगाया है कि 60% रोटी जैसी चीज़ों से आता होगा। तो, रोटी जीवन के स्रोत का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व था, और फिर, जाहिर है, हमें बस यहाँ संबंधों के बारे में सोचना शुरू करना है।

स्वर्ग से मन्ना, यीशु खुद को स्वर्ग से रोटी कहते हैं। तो, वास्तविक पवित्र स्थान में रोटी बनाई गई है, जो प्रतीकात्मक होने जा रही है, मेरा सुझाव है, और जीवित रोटी के एक चित्रण की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। यह उत्तर की ओर है।

दक्षिण की ओर, हमारे पास दीवट है। दीवट का उल्लेख बाद में कुछ बहुत ही प्रतीकात्मक अंशों में भी किया जाएगा। हम इसे जकर्याह में देखेंगे।

हम इसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में देखेंगे, और हम प्रकाश के इस पूरे विचार को आत्मा का प्रतीक और उससे जुड़ने के रूप में देखेंगे। अब, मुझे यकीन नहीं है कि आप इसे कितना आगे बढ़ाना चाहते हैं, और मैं ऐसा व्यक्ति नहीं हूँ जो, आप जानते हैं, हर चीज़ को अलग करके हर जगह त्रिमूर्ति को ढूँढ़ता है, लेकिन मेरे लिए यह आकर्षक है कि जब आप फ़र्नीचर के तीन मुख्य टुकड़ों को देखते हैं, अगर आप इसे ऐसा कहना चाहते हैं, जो उचित रूप से तम्बू में हैं, तो यह ईश्वर के साथ वाचा का सन्दूक है। यह उपस्थिति की रोटी है जो स्वर्ग से जीवित रोटी, यीशु की ओर प्रतीकात्मक रूप से इशारा करती है, और यह यह दीवट है जो आत्मा की ओर इशारा करती है।

यह एक तरह से दिलचस्प बात है। इतना ही नहीं, हमारे पास धूप के लिए एक वेदी है जो पर्दे के ठीक बगल में रखी गई है, जो सबसे पवित्र स्थान और पवित्र स्थान को अलग करती है, और जैसे-जैसे वह धूप ऊपर जाती है, यह एक सुरक्षात्मक आवरण और बादल बन जाती है। हर बार जब महायाजक, साल में एक बार, सबसे पवित्र स्थान में जाता था, तो वह धूप को अपने आगे रखता था, और इसका उद्देश्य सुरक्षा करना था, सुरक्षात्मक आवरण, जो फिर से, एक बहुत ही दिलचस्प प्रतीकात्मक संकेतक बन जाता है, और रहस्योद्घाटन की पुस्तक इस पर ध्यान देती है।

वास्तव में, यह केवल प्रकाशितवाक्य में ही नहीं, बल्कि भजन संहिता में भी पहले से ही मौजूद है। मुझे ठीक से याद नहीं है कि यह किस भजन में है।

मुझे इसे वापस जाकर देखना होगा, लेकिन इसमें प्रार्थनाओं को धूप के रूप में बताया गया है, और धूप प्रार्थनाओं का प्रतिनिधित्व करती है। तो, वहाँ दिलचस्प बातें हैं। बाहर आंगन में जाने पर, हमारे पास वेदी है।

काफी बड़ी वेदी। अगर हम उन आयामों को खोलें, तो यह संभवतः प्रत्येक तरफ लगभग छह फीट होगी। लकड़ी, लेकिन कांस्य के साथ मढ़ा हुआ, जाहिर है कि इसे ले जाया जा सकता है,

बहुत भारी नहीं है, और यह वेदी पर है कि बलि के जानवरों को जलाया जाता था, और उस वेदी के सामने, उन जानवरों पर खून भी छिड़का जाता था।

वेदी और वास्तविक तम्बू के बीच में एक बेसिन था, जिसे कभी-कभी हौदी भी कहा जाता था, और यह, निश्चित रूप से, इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि पुजारी द्वारा बलि के सभी रक्त और रक्त को साफ करने के बाद, मैं पुजारी की भूमिका और आहुति देने वाले की भूमिका के बारे में अधिक बात करूँगा, लेकिन एक बार ऐसा हो जाने के बाद, पुजारी के तम्बू में जाने से पहले, वहाँ एक बड़ी सफाई प्रक्रिया होनी चाहिए, और इसलिए हौदी भी उसी उद्देश्य के लिए है। खैर, यहाँ, मुझे लगता है, एक आरेख होने जा रहा है। यहाँ यह है।

फिर से, शायद आपने और भी अधिक परिष्कृत आरेख देखे होंगे, लेकिन यह कम से कम हमारी मदद करेगा। यहाँ पूर्व की ओर, प्रवेश द्वार। ध्यान दें कि सबसे पवित्र स्थान एक वर्गाकार होना चाहिए, और मैं दुनिया का सबसे महान कलाकार नहीं हूँ, इसलिए यह हमारा चाप है जो एक आवरण और उसके ऊपर कुछ करूब होने का प्रतिनिधित्व करता है, आप चित्र समझ गए होंगे, लेकिन यहाँ हमारा मार्ग है।

अंदर आते हुए, वेदी के दोनों तरफ सींग हैं, आप जानते हैं, इस तरह की चीजें जो प्रत्येक कोने पर थोड़ी सी उभरी हुई हैं, हाँ, रेबेका। जब उन्होंने जानवरों की बलि दी, तो क्या उन्होंने उन्हें मार दिया? नहीं, आप इसे लेकर आए। वास्तव में, अगर मैं इस स्थिति से लगभग 1,500 साल आगे बढ़ सकता हूँ, जब हम रब्बीनिक सामग्रियों के संदर्भ में निर्देश पढ़ते हैं, आप जानते हैं, यहूदी सामग्री जो पहली शताब्दी के बारे में बात करती है, जब यीशु जीवित रहे होंगे, उस मंदिर के बारे में बात करते हैं जो उस समय विशेष रूप से खड़ा था, और कहते हैं, दीवारों में चारों तरफ हुक थे, और ऐसे हुक थे जिन पर बलि देने वाले, जब वे अपना मेमना लाते थे, तो उस जानवर को लटकाते थे, उस बिंदु पर उसे मारते थे, खून इकट्ठा करते थे, उसे पुजारी के पास ले जाते थे, तो हाँ, मेरा मतलब है, जैसा कि मैंने कहा, इसका उद्देश्य वास्तव में एक ग्राफिक सबक है जो इसमें शामिल गंदगी, इसमें शामिल दर्द और पाप से निपटने में शामिल भयावहता के बारे में है।

हमने इसे नज़रअंदाज़ कर दिया है, और शायद यह खुद को इसके बारे में फिर से सोचने के लिए प्रेरित करने का एक बहुत अच्छा शैक्षिक साधन है। शायद आप इसके सबसे करीब आ सकते हैं, शायद आप इसके सबसे करीब द पैशन ऑफ़ क्राइस्ट को देखकर आ सकते हैं, क्योंकि मैंने इसे नहीं देखा, क्योंकि मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता था, लेकिन जिन लोगों ने इसे देखा, उन्होंने मुझे बताया कि क्रूस पर चढ़ाए जाने का वह दृश्य कितना अंतहीन था, लेकिन यह एक उद्देश्य के लिए किया गया था, हमें यह दिखाने के लिए कि यह वास्तव में कितना भयानक था, लेकिन हाँ, इसका उत्तर हाँ है। किसी भी दर पर, वेदी, प्रत्येक कोने पर वे उभार, जो सींगों का प्रतिनिधित्व करते हैं, वे चीजें जो वास्तव में ऊपर तक फैली हुई हैं, मूल रूप से वेदी पर सभी लकड़ी रखने के लिए डिज़ाइन की गई थीं।

आपके पास वहाँ आग जल रही है, और बेशक, ये लकड़ी को अपनी जगह पर रखे हुए हैं। बाद में इज़राइल के इतिहास में इनका अपना प्रतीकात्मक महत्व होगा, जिसके बारे में हम बाद में बात

करेंगे। खैर, यहाँ हमारा बेसिन या हमारा हौदी है, और फिर बेशक, पुजारी आता है, और उन्हें पवित्र स्थान में काम करना पड़ता है।

उन्हें धूप जलाने का काम करना पड़ता था, जो कि एक दैनिक अभ्यास था, शोब्रेड के लिए मेज़ की व्यवस्था करना पड़ता था, और दीपक और दीवट को जलाए रखना पड़ता था, क्योंकि उन्हें हमेशा जलते रहना चाहिए था, खैर, यह सही शब्द नहीं है, हमेशा जलते रहना चाहिए। ठीक है, यह हमारा छोटा सा आरेख है। कुछ और विवरण, और फिर हमें बलिदानों के बारे में बात करने की ज़रूरत है।

अलग रखे जाने का एक हिस्सा अभिषेक की प्रक्रिया थी। हिब्रू शब्द का अर्थ है तेल से लेप करना। अब, अभिषेक एक अच्छा सा शब्द लगता है, लेकिन इसका अर्थ है तेल से लेप करना, और निश्चित रूप से, क्रिया है माशाच, जिससे मशियाच आता है, जो मसीहा आता है, जिसका ग्रीक में अनुवाद क्रिस्टोस, मसीह के रूप में किया जाता है, इसलिए जब हम यीशु मसीह के बारे में बात कर रहे हैं, तो हम यीशु, अभिषिक्त व्यक्ति के बारे में बात कर रहे हैं, और इसलिए, न केवल महायाजक, बल्कि राजाओं को भी अलग रखने में, अभिषेक, तेल से लेप करना शामिल था।

जैसे-जैसे यह पूरी प्रक्रिया आगे बढ़ती है, पवित्र स्थान की स्थापना, समन्वय प्रक्रिया, अगर आपने पहले 10 अध्यायों को बहुत ध्यान से पढ़ा है, लैव्यव्यवस्था के पहले नौ अध्याय, और वास्तव में निर्गमन में, मुझे लगता है कि यह 38 भी है, यह इन लोगों पर तेल डालने और फिर कान, अंगूठे और बड़े पैर की अंगुली पर खून लगाने के बारे में बात कर रहा है, कम से कम रब्बी के विचार के अनुसार, पुजारी भगवान के वचन को सुनने के लिए तैयार हैं, और भगवान के वचन को ठीक से बोलते हैं, ठीक है? और उचित कार्य करें, और उचित तरीके से चलें। तो वैसे भी, थोड़ा अलग। धूपबत्ती एक विशेष धूपबत्ती है जिसे तम्बू में जलाया जाता है, अन्य धूपबत्ती के विपरीत।

यह एक विशेष मिश्रण माना जाता था। शायद यही वह चीज़ है जो नादाब और अबीहू ने गलत की, जब अध्याय 10 में कहा गया है, उन्होंने अपने धूपदान लिए, और वे प्रभु की आज्ञा के विपरीत, तम्बू में घुस गए। और हालाँकि हमें स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है कि वह क्या था, यह हो सकता है कि उन्होंने कुछ ऐसा लिया हो जो धूप के मामले में अपवित्र था।

इसके पीछे कुछ और कारण भी हो सकते हैं, जिन्हें मैं पाँच मिनट में बताने जा रहा हूँ। इस अभयारण्य का रख-रखाव आधे शेकेल कर से होता है। अगर मुझे सही से याद है तो आधा शेकेल लगभग पाँचवें औंस के बराबर होता है।

जब आप इसे पहली बार पढ़ते हैं, तो ऐसा लगता है कि यह एक बार का योगदान है। लेकिन जैसे-जैसे हम पुराने नियम में ऐतिहासिक आख्यानों को पढ़ते हैं, हमें यह एहसास होता है, यह धारणा बनती है कि यह कुछ ऐसा है जिसे वे नियमित आधार पर एकत्र करते थे, और यह तब स्पष्ट हो जाता है जब आप मत्ती अध्याय 17 में यीशु के साथ हुई घटना को देखते हैं। क्या कोई जानता है कि जब मैं मंदिर कर, यीशु और सुसमाचार की कहानी के बारे में बात करता हूँ तो मैं किसका उल्लेख कर रहा हूँ? क्या कोई जानता है कि हाँ, ट्रेवर?

क्या आप उस समय की बात कर रहे हैं जब वह मंदिर जाता है और लोगों को पैसे देता है? नहीं, लेकिन यह वास्तव में नहीं है। मैं इस बारे में सोचने की कोशिश कर रहा था कि इससे कैसे निपटा जाए और आपको अच्छा महसूस कराया जाए। हाँ, वहाँ वे पैसे बदल रहे थे।

और वैसे, मैं इसे वैसे भी जोड़ दूंगा, बस मौज-मस्ती के लिए। पैसे बदलने वाले लोग वहाँ थे, क्योंकि यह फसल का पर्व है, है न? और पूरे पूर्वी साम्राज्य से लोग अलग-अलग तरह के सिक्के लेकर आ रहे थे। और इसलिए, उन्हें उचित मंदिर कर का भुगतान करने के लिए अपने पैसे बदलने पड़ते थे।

पैसे बदलने वालों के साथ समस्या यह थी कि वे मंदिर परिसर में चले गए थे, जबकि उन्हें वहाँ होना चाहिए था। लेकिन मैं वास्तव में इसके बाद कुछ और खोज रहा हूँ। सारा? हाँ, मछली के बारे में क्या? हाँ, अच्छा, ठीक है।

खैर, यह सौदा है। कुछ विरोधी कहते हैं, क्या मैंने पीटर की आवाज़ सुनी? हाँ, आपने सुनी, ठीक है, अच्छा। कुछ लोग चुनौती देने वाले होते हैं।

और इसलिए वे पतरस के पास आए और उन्होंने पूछा, तो क्या तुम्हारे स्वामी ने मंदिर का कर चुकाया? और पतरस ने कहा, ज़रूर, ज़रूर, हाँ, ज़रूर। तो, फिर यह सब यीशु के पास वापस आता है। और वह कहता है, पतरस, तुम इस मछली को क्यों नहीं ढूँढ़ते? और बेशक, मछली के मुँह में पतरस और यीशु दोनों के लिए पर्याप्त मंदिर कर होगा, हालाँकि वह आगे कहता है कि बेटे, दूसरे शब्दों में, खुद, राजा के बेटे को वास्तव में मंदिर कर नहीं देना पड़ता।

लेकिन हाँ, यह एक दिलचस्प कहानी है। और यह हमें नए नियम की कहानी को समझने में मदद कर रही है जो इस आधे शेकेल कर के विचार को उठाती है। खैर, चलिए आगे बढ़ते हैं।

तम्बू से आगे बढ़ते हुए, और कुछ मायनों में, हमारे अभिषेक की चर्चा, याजकों और लेवियों के बारे में बात करने के लिए एक तरह से आगे बढ़ती है। और लेवियों के बारे में कहने के लिए बहुत कुछ है। उदाहरण के लिए, गिनती अध्याय तीन, तम्बू को ले जाने और उसकी देखभाल करने के संदर्भ में उनके कार्यों के बारे में भी बात करता है।

लेकिन यह उनका लेवी का काम था, सामान को पैक करना, उसे ले जाना, उसके चारों ओर डेरा डालना, फिर से, आंगन के पर्दों से परे एक बाहरी सीमा या अवरोध की तरह होना। और बेशक, एक बार जब मंदिर बन जाता है, तो उनके पास अन्य काम भी होंगे जो वे इसकी देखभाल के मामले में करने जा रहे हैं। वे शिक्षक भी हैं।

वे गायक और संगीतकार भी होंगे। आप में से जो लोग संगीत के शौकीन हैं, आप जानते हैं कि लेवियों ने मंदिर के मामले में एक प्रमुख भूमिका निभाई थी, अब तम्बू नहीं, बल्कि मंदिर का पवित्र स्थान, संगीत के साथ भविष्यवाणी करना और फिर गाना भी। खैर, पुजारी, विशेष रूप से, वे हैं जो बलिदान चढ़ाते हैं।

यह थोड़ी देर बाद विवाद का विषय बन जाएगा जब हम लोगों की ओर से विद्रोह के बारे में बात करना शुरू करेंगे। ध्यान दें कि वे दोनों टोरा को पढ़ाने के लिए जिम्मेदार हैं। भगवान के अपने मंत्री हैं, और उन्हें सिखाना चाहिए ताकि लोग यह जानने से वंचित न रहें कि भगवान उनसे क्या करवाना चाहते हैं।

खैर, यह हमें सामान्य रूप से पुजारियों और लेवियों से महायाजक की ओर ले जाता है। और आइए, जैसा कि हम इन चीजों को देखते हैं कि महायाजक ने कार्य करते समय क्या पहना था, मैं चाहता हूँ कि आप इनमें से लगभग सभी में देखें कि किस तरह से महायाजक के कपड़े मध्यस्थ के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाते थे। ठीक है, यही वह है जिसकी हम वास्तव में तलाश कर रहे हैं।

यह मध्यस्थ के रूप में उनकी भूमिका को कैसे दर्शाता है? तो, सबसे पहले, एफ़ोद क्या है? शब्द हम बहुत ज़्यादा इस्तेमाल नहीं करते। कोई जानता है कि एफ़ोद क्या है? यह वह परिधान है जो लगता है, अच्छा, मैं इसे वर्णित करने के लिए सबसे अच्छी चीज़ के साथ आ सकता हूँ, आप जानते हैं, वे बनियान जो पुलिसकर्मी पहनते हैं जब वे बाहर होते हैं और उन पर यह फ्लोरोसेंट नारंगी होता है और आपके पास वेल्क्रो पट्टियाँ होती हैं जो कमर के चारों ओर बंधी होती हैं और यह लगभग इतनी लंबी हो सकती है? अच्छा, इसे थोड़ा और नीचे बढ़ाएँ। इसका एक आगे का हिस्सा है।

इसमें कंधे के टुकड़े हैं, ठीक वैसे ही जैसे छोटी बनियान में होते हैं। और इसमें पीछे की तरफ एक पट्टी है, और फिर शायद कुछ टाई हैं जो इसे किनारों पर एक साथ लटकाती हैं। यह एक पूरा परिधान नहीं है।

यह एक ऊपरी वस्त्र है। और निश्चित रूप से, हमारे पास जो कंधे हैं, और यहाँ एपोद के संदर्भ में मुख्य बात है, कंधों पर हमने इस्राएल के पुत्रों, इस्राएल के बच्चों के नाम उकेरे हैं। तो निश्चित रूप से, जब महायाजक पवित्र स्थान में प्रवेश कर रहा है, तो वह इस्राएल के पुत्रों को अपने कंधों पर उठा रहा है, जो उसकी मध्यस्थता की भूमिका का हिस्सा है।

वह उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में ले जा रहा है। इसके अलावा, हमारे पास एपोद के सामने छाती का टुकड़ा नामक एक चीज़ है। इसकी दो महत्वपूर्ण भूमिकाएँ हैं।

सबसे पहले, इसमें 12 पत्थर हैं। फिर से, हारून के हृदय के ऊपर, अब वह उन्हें अपने कंधों पर नहीं उठा रहा है, अब उन पत्थरों में दर्शाए गए इस्राएल के 12 बच्चों को अपने हृदय के ऊपर लेकर जा रहा है, जब वह परमेश्वर की उपस्थिति में जा रहा है। 12 पत्थर, फिर से, 12 जनजातियों में से एक का प्रतिनिधित्व करते हैं।

लेकिन फिर हमारे पास यह उरीम और थुम्मिम चीज़ है, छाती के टुकड़े के अंदर छोटी सी जेब जिसमें उरीम और थुम्मिम नामक कुछ है, जिसके बारे में हम वास्तव में नहीं जानते कि इसका क्या मतलब है या यह कैसे काम करता है। सबसे आम सुझाव यह है कि इसका मतलब रोशनी और पूर्णता है क्योंकि हिब्रू में रोशनी के लिए शब्द या है, और इसलिए बहुवचन ओरिम, उरीम होगा। आप वहाँ समानता सुन सकते हैं।

तम का अर्थ है संपूर्ण, पूर्ण, इत्यादि, इसलिए तुमिम, पूर्णताएँ। तो, रोशनी और पूर्णताएँ। इसे देखने के अन्य तरीके भी हैं, जैसे कि, अच्छा, या वर्णमाला के पहले अक्षर से शुरू होता है, और तुमि वर्णमाला के अंतिम अक्षर से शुरू होता है, इसलिए शायद कुछ मायनों में, यह एक व्यापक चीज़ है। हालाँकि, यह काम करता है।

कुछ लोग कहते हैं, ठीक है, या यह प्रकाश से नहीं आया हो सकता है; यह शाप के लिए हिब्रू शब्द से आया हो सकता है। एक तरफ शाप और दूसरी तरफ अच्छी चीज़ें, पूर्णता। मुझे नहीं पता कि यह कैसे काम करता है।

लेकिन यहाँ मुख्य बात है। निर्गमन 28 में, और वैसे, यह सब बातें निर्गमन 28 में वर्णित हैं यदि आप वापस जाकर इस पर जाँच करना चाहते हैं। निर्गमन 28 कहता है कि हारून निर्णय लेने के साधन वहन करेगा।

और यही उरीम और तुम्मीम थे। वे निर्णय लेने के साधन थे। इसलिए चाहे वे किसी भी तरह से काम करते हों, जब वह कोई मुश्किल मामला परमेश्वर की उपस्थिति में लाता था, तो किसी न किसी तरह उसे उसके संबंध में उत्तर मिल जाता था।

और वास्तव में, जैसा कि इज़राइल के इतिहास में कुछ बातें सामने आती हैं, कुछ संकेत हैं कि यह चीज़ वास्तव में इस्तेमाल होती रही, कम से कम कुछ समय के लिए, डेविड के समय तक, शायद उससे आगे भी। तो, हम उस पर आएं, बाद में उस पर वापस आएं। उसके पास एक बैंगनी रंग का लबादा भी है, एक गहरा हल्का नीला रंग का लबादा, और उसके निचले हिस्से में घंटियाँ और अनार लगे हुए हैं।

अनार शायद भूमि की उपजाऊपन का प्रतिनिधित्व करते हैं। अनार में बीजों की संख्या इसकी उपजाऊपन के बारे में कुछ बताती है और उस तरह की चीज़ों का प्रतीक है। लेकिन साथ ही, घंटियाँ इसलिए भी हैं ताकि जब वह आंतरिक गर्भगृह में हो तो उसकी आवाज़ सुनी जा सके।

हमारे पास एक पगड़ी भी है। पगड़ी पर क्या लिखा है? भगवान के लिए पवित्र। तो, वह अपने सिर पर मध्यस्थ के रूप में अपनी स्थिति की घोषणा कर रहा है। और फिर सफेद लिनन के अंडरवियर, उस मामले में पवित्रता का संकेत।

मैंने पहले ही यह कहा है, लेकिन सिर्फ यह याद दिलाने के लिए कि यीशु हमारे महान महायाजक हैं, जैसा कि इब्रानियों की पुस्तक में स्पष्ट रूप से बताया गया है, वे उस मध्यस्थ की भूमिका को निभा रहे हैं। और इसीलिए, मैं सुझाव दूंगा कि यह वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है कि हमारी प्रार्थनाएँ जानबूझकर की जाएँ, बिना सोचे-समझे नहीं, बल्कि जानबूझकर मसीह यीशु के नाम पर। खैर, हमें समन्वय के बारे में बात करने की ज़रूरत है।

इन अध्यायों को पढ़ते हुए आपको यह अहसास होगा कि उन्होंने यह सब कितनी सावधानी से किया है। सब कुछ एकदम सही तरीके से किया गया है। यहाँ कुछ भी बेतरतीब या अचानक नहीं हुआ है।

ऐसा नहीं है कि परमेश्वर को स्वतःस्फूर्त आराधना पसंद नहीं है, लेकिन इस मामले में ऐसा नहीं था। ऐसा लगता है कि नादाब और अबीहू स्वतःस्फूर्त आराधना में लगे हुए थे। फिर से, जो भी मामला था, हम ठीक से नहीं जानते, लेकिन यह प्रभु की आज्ञा के विपरीत था, और यह अपमान था, परमेश्वर की पवित्रता का पूर्ण अपमान।

और इसलिए, वे इसके परिणामस्वरूप अपनी जान गँवा देंगे। आग उन्हें भस्म कर देगी। और आप इसके बारे में लेविटिकस अध्याय 10 में पढ़ सकते हैं, ठीक है? यह एक दुखद स्थिति है।

लेकिन जैसा कि हम देखेंगे, यह सिर्फ यहीं नहीं है, बल्कि जब भी परमेश्वर के लोगों के लिए उसके डिजाइन में कोई नया कदम आगे बढ़ता है, तो हमेशा ऐसे लोग होते हैं जो सीमाओं को लांघते हुए नज़र आते हैं। और उस समय, परमेश्वर सबक सिखाने का चुनाव करता है। आमतौर पर, वह इस तरह की सज़ा न देकर असाधारण रूप से दयालु होता है।

लेकिन इस मामले में, हमारे पास यह है। इसलिए, पुजारियों के लिए प्रतिबंध, उन्होंने वास्तव में नादाब और अबीहू घटना के बाद स्पष्ट किया है, उनमें से कुछ। और इनमें से कुछ हमें इस बात का थोड़ा संकेत दे सकते हैं कि वे क्या गलत कर रहे थे।

इसके अलावा, लैव्यव्यवस्था 21 में इनमें से कुछ प्रतिबंधों के बारे में बताया गया है। यहाँ पूरा विचार बिना किसी संदेह के, परमेश्वर की पवित्रता को बनाए रखना है। और इसलिए, जो सेवक याजक हैं, उन्हें अपने जीवन में परमेश्वर की पवित्रता को प्रदर्शित करने की आवश्यकता है।

इसलिए, उन्हें शोक मनाने की प्रथा में शामिल नहीं होना था। दूसरे शब्दों में, अपने कपड़े फाड़ना, अपने बाल बढ़ाना और गंदे हो जाना। जाहिर है, अगर ऐसा होता, तो वे परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं आ सकते थे।

यह सही नहीं था। कुछ लोगों का कहना है कि समारोह के दौरान शराब नहीं पी जा सकती थी, शायद यही नदाब और अबीहू के मामले के पीछे की वजह हो सकती है। हो सकता है कि वे इस समारोह के दौरान थोड़े नशे में थे और बिना सोचे-समझे वहाँ चले गए।

वैसे, यहाँ एक और त्वरित अंतर है। कुछ लोग निर्गमन 24 तक वापस जाते हैं, और आपको याद होगा कि नादाब और अबीहू वे लोग थे जो इस्राएल के बुजुर्गों के साथ पहाड़ पर थे और भगवान की उपस्थिति को देख रहे थे। सुझाव यह है कि, शायद उन्हें लगा कि यह उनकी जगह होने जा रही है।

आखिरकार, उन्हें पहाड़ पर भगवान के साथ यह अनुभव हुआ था। क्यों? उन्होंने इसे अहंकार से अनुवादित किया और कहा, हम उनकी उपस्थिति में रहने के लायक हैं। हम अंदर जा रहे हैं और बहुत ही भयानक तरीके से यह अहंकारी कदम उठा रहे हैं और पवित्र और अपवित्र के बीच अंतर नहीं कर रहे हैं।

यही सबसे बड़ी बात है। आखिरी तीन बातें लैव्यवस्था 21 से आती हैं, उन्हें दाढ़ी नहीं कटवानी थी, कुंवारी लड़कियों से शादी करनी थी, कोई शारीरिक दोष नहीं था। वैसे, शारीरिक दोष वाले लोग जो लेवितिकल लाइन में थे, उनके लिए अभी भी प्रावधान था, लेकिन वे भगवान के पवित्र स्थान में नहीं जा सकते थे।

ठीक है, अभी 10 बज चुके हैं। हम अगली बार बहुत जल्दी बलिदान पूरा कर लेंगे और फिर आगे बढ़ेंगे क्योंकि यह एक अच्छा तरीका होगा।